Serving Education for Last 40 Years

NEERAJ®

M.H.D. -21

मीरा का विशेष अध्ययन

Chapter Wise Reference Book
Including Many Solved Sample Papers

Based on

I.G.N.O.U.

& Various Central, State & Other Open Universities

By: *Vaishali Gupta*

NEERAJ PUBLICATIONS
(Publishers of Educational Books)

Mob.: 8510009872, 8510009878 E-mail: info@neerajbooks.com
Website: www.neerajbooks.com

MRP ₹ 320/-

Content

मीरा का विशेष अध्ययन

Question Paper—June-2023 (Solved) 1-2
Question Paper—December-2022 (Solved) 1-2
Question Paper—Exam Held in March-2022 (Solved) 1-2
Question Paper—Exam Held in February-2021 (Solved) 1-3
Sample Question Paper-1 (Solved) 1-3
Sample Question Paper-2 (Solved) 1-3
Sample Question Paper-3 (Solved) 1-3

S.No.	Chapterwise Reference Book	Page

मीरा का जीवन और युग

1. मीरा का जीवन परिचय 1
2. मीरा और उनका युग 12
3. गुजरात के लोक जीवन में मीरा 25
4. परिवार में मीरा 31
5. भक्ति आंदोलन में मीरा का महत्त्व 40

मीरा की भक्ति भावना

6. मीरा के कृष्ण 52
7. मीरा की भक्ति का स्वरूप 61
8. मीरा की प्रेमभावना 73
9. मध्यकालीन भारतीय भक्त कवयित्रियां और मीरा 82
10. मीरा परवर्ती हिंदी की भक्त कवयित्रियाँ 91

मीरा की काव्यकला

11. मीरा की काव्यकला 98

12. मीरा की वेदना और विद्रोह 108

13. मीरा और लोकमानस 118

14. मीरा की काव्यभाषा 126

15. मीरा की प्रमुख कविताओं का विश्लेषण 134

आज के समय में मीरा का महत्त्व

16. स्त्री विमर्श और मीरा 147

17. हिंदी आलोचना में मीरा 160

18. मीरा की प्रासंगिकता 170

■■

Sample Preview of the Solved Sample Question Papers

Published by:

NEERAJ PUBLICATIONS

www.neerajbooks.com

QUESTION PAPER

June – 2023

(Solved)

मीरा का विशेष अध्ययन

M.H.D.-21

समय : 2 घण्टे] *[अधिकतम अंक : 50*

नोट : *प्रश्न क्रमांक 1 अनिवार्य है। शेष में से किन्हीं तीन प्रश्नों के उत्तर दीजिए।*

प्रश्न 1. निम्नलिखित पद्यांशों में से किन्हीं दो की संदर्भ सहित व्याख्या कीजिए।

(क) माता छोड़ी पिता छोड़े, छोड़े सगा भाई।
साधु संग बैठ-बैठ, लोकलाज खोई॥
संत देख दौड़ आई, जगत देख रोई।
प्रेम आँशु डार-डार, अमर बेल बोई॥
मारक में तारग मिले, संत राम दोई।
संत सदा शीश राखूँ, राम हृदय होई॥
अंत में से तंत काढ़ी, पीछे रही सोई।
राणे भेज्या विष का प्याला, पीवत मस्त होई॥

उत्तर–संदर्भ–प्रस्तुत पद मीराबाई द्वारा रचित है। इस पद में मीरा ने अपनी भक्ति में घर छोड़ने और ईश्वर को पाने के लिए जो कष्ट सहे, उनका वर्णन किया है।

व्याख्या–मीराबाई कहती हैं कि अपने आराध्य को पाने के लिए मैंने माता-पिता और सगे भाई को छोड़ दिया। साधु-संगति में बैठने के कारण समाज ने मेरी बहुत निंदा की। मैं संतों को देखकर दौड़ी चली गई, किंतु इस संसार की संकीर्ण दृष्टि देखकर अत्यंत दुख हुआ। प्रेम के आँसुओं से भक्ति रूपी अमरबेल को बोया। भक्ति के मार्ग में कष्टों को सहने के लिए संत और राम मेरे सहारा बने। मैं संतों के चरणों में अपना शीश झुकाती हूँ और मेरे राम मेरे हृदय में रहते हैं। अंत में मैंने यही सार निकाला कि संसार की विचारधारा ऐसी ही रहेगी और भक्ति के मार्ग पर चलकर ही मुझे अपना लक्ष्य प्राप्त होगा। इससे मेरा हृदय शांत हो गया। राणा ने मुझे मारने के लिए विष का प्याला भेजा, जिसे पीकर मैं मस्त हो गई अर्थात् ईश्वर ने मुझे विष पीने के बाद भी जीवन दिया।

विशेष–1. तत्कालीन सामाजिक व्यवस्था का चित्रण है, जिसमें स्त्री हर ओर बंधनों में बंधी हुई है।

2. भक्ति का मार्ग सरल नहीं होता।

3. राजस्थानी मिश्रित ब्रजभाषा है।

4. 'डार-डार' में पुनरुक्ति प्रकाश तथा 'अमरबेल' में रूपक अलंकार है।

(ख) साधुन के संग बैठ-बैठ के, लाज गमाई सारी।
नित प्रति उठि नींच घर जावो,
कुलकूँ लगावो गारी॥
बड़ा घरांकी छोरी कहावो, नाँचो दे दे तारी।
बर पायो हिंदवाणो सूरज,
अब दिल में कहा धारी॥
तार्‌यो पीहर सासरो तार्‌यो, माय मोसाली तारी॥
मीरां ने सतगुरुजी मिलिया,
चरण कमल बलिहारी॥

उत्तर–संदर्भ–प्रस्तुत पद मीराबाई द्वारा रचित है। इस पद में मीराबाई बता रही हैं कि उनकी भक्ति के कारण मायके और ससुराल के लोग उन पर कुल को कलंकित करने का आरोप लगा रहे हैं। इसी का वर्णन करते हुए कवयित्री कह रही हैं–

व्याख्या–ससुराल और मायके वाले कहते हैं कि साधु की संगत में बैठकर तुमने सारी लाज गँवा दी है। प्रतिदिन नीच लोगों के घर जाकर कुल को कलंकित कर रही हों। तुम बड़े घर की बेटी हों, तुम्हें ताली बजा-बजाकर नाचना शोभा नहीं देता। अब ससुराल-मायका सभी मुझे तो व्यर्थ लगते हैं। कोई चाहे कुछ भी कहे मीरा को तो उसके सतगुरु मिल गए हैं, जिनके चरणों में वह बलिहारी जाती है।

विशेष–1. राजस्थानी भाषा है।

2. समाज में स्त्री की दयनीय दशा का वर्णन है।

3. स्त्री को हर प्रकार से बंधनों में बांधा जाता है। वह स्वतंत्र नहीं है।

4. पुनरुक्ति प्रकाश अलंकार है।

5. 'चरण कमल' में रूपक अलंकार है।

(ग) राम नाम की जहाज चलास्यां,
भवसागर तिर जास्यां॥
चरणामृत को नेम हमारो,
नित उठि दरसण पास्या॥

NEERAJ PUBLICATIONS www.neerajbooks.com

www.neerajbooks.com

विषरा प्याला राणोजी भेज्या,
इमरत करि गटकास्या।।
यो संसार विनास जानिकै, ताको संग छिटकास्यां।।
लोक लाज कुल काणिहु तंजिकै,
निरभै निसांण घुरास्यां।।
मीरा के प्रभु हरि अविनाशी,
चरणकमल बलि जास्यां।।

उत्तर–संदर्भ–प्रस्तुत पद मीराबाई द्वारा रचित है। इस पद में मीराबाई ने बताना चाहा है कि भक्ति के मार्ग में चाहे जितने कष्ट आए, आपके आराध्य आपके सारे कष्ट हरकर आपको संसार के भवसागर से मुक्ति दिलाते हैं।

व्याख्या–मीराबाई कहती हैं कि संसार रूपी भवसागर को पार करने के लिए मैंने तो रामनाम रूप जहाज चला दिया है। उनका नाम मेरे लिए चरणामृत के समान है और मैं प्रतिदिन उठकर उनके दर्शन प्राप्त करती हूँ। राम की कृपा से ही राणा द्वारा भेजे गए विष के प्याले को मैंने अमृत समझकर पी लिया। मेरा कुछ नहीं बिगड़ा। यह संसार जानता है कि सब कुछ क्षणभंगुर है, फिर भी तुम्हारे संग दुर्व्यवहार करता है। मैं तो राम के सहारे ही लोक-लाज एवं कुल के सम्मान की चिंता छोड़कर निर्भय होकर अपनी भक्ति में लीन हूँ। मीराबाई कहती हैं कि मेरे प्रभु हरि अविनाशी हैं। उनके चरणकमलों में ही मैंने अपना सर्वस्व अर्पण कर दिया है।

विशेष–1. सच्ची भक्ति करने वाले भक्त के हर कष्ट को ईश्वर दूर कर भक्त की रक्षा करते हैं।

2. यह संसार ईश्वर की भक्ति करने वाले को भी लोक-लाज, कुल का सम्मान आदि बंधनों में बांधकर उसे भक्ति-मार्ग से विचलित करने का प्रयास करता है।

3. राजस्थानी मिश्रित ब्रज भाषा है।

4. रूपक एवं अनुप्रास अलंकार की छटा है।

(घ) पीतमकू पतियाँ लिखूँ, कागा तू ले जाइ।
पीतमकू तू यौं जाइ कहियौ,
थारी विरहनि अन्न न खाइ।।
तुम मति जानो पीतमा हो,
तुम बिछड्यां मोहि चैंन।
मोहि चैंन जब होइगो, भरि-भरि देखूँ नैंन।।
मीरां दासी वारणै हो, पिव-पिव करत बिहाइ।
बेगि मिलौ प्रभु अंतरजामी,
तुम बिन रह्यो न जाइ।।

उत्तर–संदर्भ–प्रस्तुत पद मीराबाई द्वारा रचित है। इसमें मीरा अपने विरह की पीड़ा को पत्र के माध्यम से अपने प्रीतम को बताना चाहती हैं।

व्याख्या–मीराबाई कहती हैं कि हे काग! मैंने अपने प्रीतम रूपी प्रभु को पत्र लिखा है, जिसे तू उन तक पहुँचा दे। तू मेरे प्रीतम से जाकर कह दियो कि तुम्हारे विरह में तुम्हारी प्रियतमा ने अन्न-जल सब त्याग रखा है। तुम यह समझ लो कि तुम्हारे जाने से तुम्हारी प्रियतमा का सुख-चैन सब छिन गया है। मुझे चैन तभी आएगा, जब मैं तुम्हें जी भरकर देख लूँगी। मीरा कहती है कि तुम्हारी दासी पपीहे की भाँति विरह में पिव-पिव की रट लगाकर अपने विरह को दिखाती है, किंतु कोई उसकी पीड़ा को नहीं समझता। मीराबाई कहती है कि मेरे प्रभु तुम तो अंतर्यामी हो, मेरी पीड़ा को समझो। आपके बिना अब नहीं रहा जाता है।

विशेष–1. वियोग श्रृंगार है।

2. प्रभु से मिलने पर ही भक्त को चैन मिलता है।

3. राजस्थानी मिश्रित ब्रज भाषा है।

4. अनुप्रास अलंकार है।

प्रश्न 2. गुजरात में मीरा के प्रवास के कारणों की चर्चा कीजिए।

उत्तर–संदर्भ–देखें अध्याय-3, पृष्ठ-28, प्रश्न 2

प्रश्न 3. आराध्य के साथ मीरा के संबंधों को उदाहरण सहित विश्लेषित कीजिए।

उत्तर–संदर्भ–देखें अध्याय-7, पृष्ठ-69, प्रश्न 3

प्रश्न 4. मीरा की काव्य-भाषा के विविध पक्षों पर प्रकाश डालिए।

उत्तर–संदर्भ–देखें अध्याय-14, पृष्ठ-128, 'मीरा की विविध-रूपा काव्यभाषा'

प्रश्न 5. मीरा की कविता में 'जोगी' के स्वरूप का विवेचन कीजिए।

उत्तर–संदर्भ–देखें अध्याय-17, पृष्ठ-165, प्रश्न 3

प्रश्न 6. निम्नलिखित में से किन्हीं दो पर टिप्पणियां लिखिए–

(क) वाचिक परम्परा में मीरा

उत्तर–संदर्भ–देखें अध्याय-1, पृष्ठ-4, 'मीरा से संबंधित किंवदंतियाँ'

(ख) मुक्ताबाई

उत्तर–संदर्भ–देखें अध्याय-9, पृष्ठ-84, 'मुक्ताबाई'

(ग) हिंदी साहित्य के इतिहास ग्रंथों में मीरा

उत्तर–संदर्भ–देखें अध्याय-17, पृष्ठ-162, 'हिंदी साहित्य के इतिहास ग्रंथों में मीरा'

(घ) दास्य भक्ति

उत्तर–संदर्भ–देखें अध्याय-7, पृष्ठ-64, 'दास्य भक्ति'

■■

NEERAJ PUBLICATIONS www.neerajbooks.com

www.neerajbooks.com

Sample Preview of The Chapter

Published by:

NEERAJ PUBLICATIONS

www.neerajbooks.com

मीरा का विशेष अध्ययन

मीरा का जीवन और युग

मीरा का जीवन परिचय

1

परिचय

मीरा मध्यकालीन भक्ति आंदोलन का प्रखर चेहरा थी। उन्होंने अपना पूरा जीवन कृष्ण भक्ति में लगा दिया। मीरा का जीवन कोई आम जीवन नहीं था, समर्पण उनके जीवन का विशेष पहलू था, फिर भी उनका जीवन एक परंपरा का विद्रोह करने वाली नारी का जीवन था। उन्होंने उन सभी नैतिक और सामाजिक बातों को ललकारा था, जो एक राजपूत स्त्री में होनी जरूरी मानी जाती थी और वह भी एक राजवंशी महिला में। मीरा ने राजपूतों के परंपरागत नियमों को न मानकर एक निडर लहर पैदा कर दी थी। मीरा की कृष्ण के प्रति भक्ति साधन थी, साध्य नहीं। कृष्ण भक्ति के माध्यम से मीरा ने सामंतवादी-ब्राह्मणवादी बेड़ियों को तोड़ा एवं स्त्री मुक्ति की एक नई राह तलाश की।

अध्याय का विहंगावलोकन

जीवन से संबंधित स्रोत सामग्री

मध्यकालीन भारतीय साहित्य में भक्तमालों का विशिष्ट स्थान रहा है, भक्तमाल अर्थात जिनमें युगीन भक्तों के परिचयात्मक विवरण हुआ करते थे। इन भक्तमालों में मीरा का विवरण भी एक भक्त के रूप में ही मिलता है, क्योंकि मीरा अपनी कृष्ण भक्ति के लिए विख्यात थी। बहुत-से भक्तों ने भक्तमाल में मीरा का उल्लेख किया है। ब्रह्मदास ने अपने भक्तमाल में मीरा के विषपान का उल्लेख किया है। उन्होंने पमेल नामक भक्त स्त्री के साथ मीरा की साम्यता स्थापित की है। नाभादास 17 वीं सदी के उत्तरार्द्ध के रचनाकार थे। उन्होंने मीरा के विषय में लिखा है कि मीरा निरंकुश एवं अति निडर थी। मीरा ने कृष्ण भक्ति के लिए 'लोक-कुल, लाज-शृंखला' सबका त्याग कर दिया था। प्रियादास की 'भक्तमाल की टीका', 'भक्तिरस बोधिनी' जिसकी रचना 1769 के आस-पास की मानी जाती है, उसमें मीरा के विषपान की घटना, अकबर व मीरा के भेंट के प्रसंग तथा द्वारिका में रणछोड़जी की मूर्ति में मीरा के विलीनीकरण की घटना का उल्लेख मिलता है। यह वह समय था, जब मीरा के साथ अनेक किंवदंतियां व चमत्कारिक घटनाएँ जुड़ चुकी थीं। प्रियादास के पौत्र वैष्णवदास ने 'भक्त रस बोधिनी टीका' का भावार्थ दिया है। राघौदास के भक्तमाल, जिनकी रचना का अनुमानित समय सम्वत् 1717 है, नाभादास के भक्तमाल पर भी आधारित है, तथापि स्रोत सामग्री के रूप में इसका भी विशिष्ट स्थान है।

वार्ता साहित्य में भी मीरा के विषय में बताया गया है। वार्ता साहित्य के रचनाकार भी वैष्णव भक्त ही थे। वार्ता साहित्य मूलरूप से गद्य ग्रंथ है। 'चौरासी वैष्णवन की वार्ता' एक ऐसा ही वार्ता ग्रंथ है तथा इसका संबंध वल्लभ संप्रदाय से है। इस ग्रंथ से ऐसा आभास होता है कि बल्लभ संप्रदाय मीरा एवं उसकी भक्ति के स्वरूप को पसंद नहीं करता था। 'चौरासी वैष्णवन की वार्ता' में तथा वल्लभ संप्रदाय से संबंधित एक अन्य ग्रंथ 'दो सौ वैष्णव की वार्ता' में भी मीरा का उल्लेख किया गया है। मध्यकालीन राजपूताने में ख्याति ग्रंथ लिखे जाने की परंपरा थी, जिनमें राजपरिवारों की प्रशंसा की जाती थी। ख्याति ग्रंथों से मीरा के विषय में तो कोई विशेष जानकारी प्राप्त नहीं होती, किंतु उनके परिवार के संबंध में महत्त्वपूर्ण जानकारियां अवश्य प्राप्त होती हैं। इसके अलावा नागरीदास के 'नागर समुच्चय' एवं सुखसारण मीराबाई की परची में मीरा के विषय में विस्तृत जानकारी दी गई है। नागरीदास किशनगढ़ नरेश राज सिंह के ज्येष्ठ पुत्र थे, जिनका वास्तविक नाम सावंत सिंह था तथा इन्हें राजस्थानी व ब्रजभाषा का अच्छा ज्ञान था। सुखसारण रामस्नेही संप्रदाय से संबंधित थे। इन दोनों रचनाकारों के ग्रंथों में मीरा से संबंधित उन समस्त घटनाओं का विवरण है, जो आज के समय में किंवदंतियां बन चुकी हैं। ये रचनाएं 18 वीं सदी के उत्तरार्द्ध की हैं, किंतु मीरा के अध्ययन में इनका विशिष्ट महत्त्व है। लिखित सामग्री की अपेक्षा पुरातात्विक स्रोत सामग्री को अधिक विश्वसनीय व प्रामाणिक माना जाता है। मीरा के आलोचकों द्वारा पुरातात्विक स्रोत सामग्री का उपयोग बहुत कम किया गया, किंतु वर्तमान समय में मीरा के जीवन से संबंधित जो शोध किये जा रहे हैं, उनमें पुरातात्विक स्रोत सामग्री का उपयोग भी किया गया है। पाण्डुलिपियां भी मीरा से संबंधित जानकारी का महत्त्वपूर्ण स्रोत हैं, किंतु ये देश के विभिन्न भागों में बिखरी हुई हैं तथा इनका संग्रहण एवं प्रकाशन भी सही ढंग से नहीं हो पाया है।

इतिहास के आलोक में मीरा का जीवन

भक्तों द्वारा दिया गया मीरा का विवरण साधारण जानकारी पर आधारित है, जो उन्होंने सामान्य जनमानस से सुना। भक्त मीरा या

www.neerajbooks.com

महाराणा परिवार का इतिहास लिखने की मंशा नहीं रखते और न ही उनका कोई संपर्क चित्तौड़ दुर्ग एवं उसकी राजनीतिक गतिविधियों से था। इतिहास लेखन की राजनीतिक प्रवृत्ति ही ऐसी रही है कि वह महिलाओं के योगदान को अधिक महत्त्व नहीं देती। चूँकि मीरा भी एक स्त्री थी इसलिए परवर्ती इतिहास ग्रंथों में मीरा के विषय में अथिक उल्लेख नहीं मिलता। सही अर्थों में मीरा एक विद्रोहिणी थी, जिसने महाराणा परिवार की झूठी मर्यादा को तोड़ा था, इसलिए मेवाड़ की राजसत्ता यह कभी नहीं चाहती थी कि मीरा का कहीं कोई उल्लेख हो। इसी कारण मीरा के अध्येताओं के पास मीरा से संबंधित स्रोत सामग्री लगभग न के बराबर है, तथापि परिस्थितिजन्य साक्ष्यों के आधार पर मीरा के जीवन का अनुमान लगाया जा सकता है, जोकि इतिहास सम्मत भी हो।

मीरा को उनके दादा राव दूदाजी ने पाला था, जोकि मेड़ता के शासक थे। बचपन से ही तीक्ष्ण बुद्धि वाली मीरा राव दूदा के साथ स्थानीय राजनीति को करीब से देख रही थी। महाराणा सांगा मीरा से प्रभावित थे तथा राजनीतिक हित को ध्यान में रखते हुए उन्होंने मीरा को अपने ज्येष्ठ पुत्र कुंवर भोज की पत्नी बनाने का निश्चय किया। मीरा का विवाह कुंवर भोज के साथ हुआ, किंतु जल्दी ही कुंवर भोज की मृत्यु हो गई। मीरा ने पारिवारिक मर्यादाओं की अवहेलना करते हुए अपना जीवन मेवाड़ की जनता के लिए समर्पित किया तथा जनसंपर्क का निश्चय किया। महाराणा परिवार मीरा के इस व्यवहार से नाखुश था। मीरा ने महाराणा परिवार के प्रतिबंधों को न मानते हुए मेवाड़ की जनता के लिए तथा एक स्त्री के रूप में अपने अधिकारों के लिए संघर्ष शुरू कर दिया। इसके लिए मीरा ने भक्ति के मार्ग को चुना। इससे महाराणा परिवार मीरा के विरुद्ध हो गया और मीरा को चित्तौड़ दुर्ग छोड़ना पड़ा। वह पहले मेड़ता और उसके बाद वृंदावन गई। उसके बाद वह द्वारिका गई और अपना शेष जीवन वहीं बिताने का निश्चय किया। इसी बीच मेवाड़ में राजनीतिक परिवर्तन हुए तथा महाराणा उदयसिंह के हाथों में मेवाड़ की सत्ता आई। उन्होंने मीरा से पुनः मेवाड़ लौट आने का आग्रह किया, किंतु मीरा ने अज्ञातवास को अपनाया।

मीरा का बचपन

मीरा के बचपन के विषय में किंवदंतियों से जानकारी मिलती है। मीरा मेड़ता के संस्थापक राव दूदाजी की पौत्री तथा रतनसिंह की पुत्री थी। मीरा के पिता रतनसिंह का देहांत खानवा के युद्ध में हो गया था। ऐसा अनुमान है कि मीरा की मां का देहांत भी बचपन में ही हो गया था। उनका पालन-पोषण रावदूदा ने ही किया। रावदूदा विष्णु के एक लोकरूप चारभुजानाथ के परम भक्त थे। मीरा की राजनीति समझ का विकास रावदूदा के संरक्षण में रहते हुए हुआ। ऐसा माना जाता है कि रावदूदा की भक्ति का प्रभाव भी मीरा पर अवश्य रहा होगा, किंतु यह आश्चर्यजनक है कि रावदूदा विष्णुभक्त थे, जबकि मीरा कृष्ण भक्त।

मीरा का जन्म मारवाड़ के मेड़ता प्रदेश में हुआ था, किंतु उनके जन्म स्थान को लेकर विद्वानों में मतभेद है। मीरा के जन्म स्थल के तौर पर कुड़ली, मेड़ता, बाजोली मारवाड़ एवं मेवाड़ कई गांवों के नाम प्रस्तुत किये जाते हैं। कुछ विद्वानों का मानना है कि मीरा का जन्म मेवाड़ के किसी गाँव में हुआ था, जहाँ उसका ननिहाल था। मीरा के जन्म स्थल को लेकर मतभेद अवश्य है, किंतु यह निश्चित है कि मीरा का बचपन मारवाड़ के मेड़ता प्रदेश में ही बीता था।

मारवाड़ और मेवाड़ में मीरा के विषय में बहुत-सी किंवदतियां प्रचलित हैं, जिनसे पता चलता है कि मीरा बचपन से ही कृष्ण को अपना पति मानने लगी थी, किंतु अनुमान ऐसा लगाया जाता है कि वह अपने पति कुंवर भोजराज की मृत्यु के पश्चात् से कृष्ण को अपना पति मानती थी। कुंवर भोजराज की मृत्यु के पश्चात् जब मीरा को सती किया जाने लगा तो उन्होंने कहा कि वह कृष्ण की वैधानिक पत्नी है, किसी मेवाड़ कुंवर की विधवा नहीं।

मीरा के काव्य अध्ययन तथा उनके जीवन की घटनाओं का गहन अध्ययन करने के पश्चात् यह तो निश्चित तौर पर कहा जा सकता है कि वह चतुर एवं तीक्ष्ण बुद्धि की थी। उनका रूप भी बहुत सुंदर था, इसीलिए महाराणा सांगा ने मीरा को अपने ज्येष्ठ पुत्र के लिए बहु के रूप में स्वीकार किया।

मीरा की बचपन से ही साहित्य में रुचि थी, जोकि बाद में मीरा के काव्य सृजन एवं निर्माण में सहायक सिद्ध हुई। मीरा ने विवाह के पश्चात् मेवाड़ राजपरिवार में महत्त्वपूर्ण स्थान प्राप्त किया, किंतु कुंवर भोजराज की जल्दी ही मृत्यु हो गई, जिससे मीरा के सामने संकट आ गया, परंतु मीरा ने उनका मुकाबला पूरे साहस के साथ किया। मीरा ने सती होने से इंकार किया तथा कृष्ण को अपना पति बताया, इसलिए यह कहा जा सकता है कि मीरा की कृष्ण भक्ति उनके बचपन की श्रद्धा का परिणाम नहीं, बल्कि परवर्ती समय की जरूरत थी।

चित्तौड़गढ़ में मीरा का जीवन

अमीर खुसरो ने चित्तौड़ के किले का भव्य वर्णन करते हुए लिखा है कि इसमें अनेक मंदिर तथा महल है, जिनमें मध्यकालीन राजपूत स्थापत्य की सर्वश्रेष्ठता नजर आती है। चित्तौड़ का दुर्ग एक विकसित मध्यकालीन शहर था। देश के अनेक भागों से तथा इस्लामिक जगत के बहुत-से व्यापारी दुर्ग में व्यापार के उद्देश्य से आते थे और कार्य हो जाने पर लौट जाते थे। विभिन्न संप्रदाय एवं मत-मतांतरों के योगी, साधु, भक्त इत्यादि भी समय-समय पर दुर्ग में आते रहते थे। ऐसा माना जाता है कि मीरा के चित्तौड़ प्रवास के दौरान उनका संपर्क अनेक व्यापारियों व भक्तजन से रहा होगा तथा उन्हें देश-विदेश की जानकारी भी होती होगी। मीरा चित्तौड़ के जिन महलों में रहती थी, उनका निर्माण महाराणा कुंभा ने करवाया था, इसलिए इन्हें कुंभा महल के नाम से जाना जाता है। ये महल उस समय की सभी ऐतिहासिक घटनाओं के साक्षी रहे हैं। मीरा के साथ इस दुर्ग में बहुत से षड्यंत्र और राजनीतिक घटनाएं घटती रहीं, फिर भी मीरा इस दुर्ग में ही रहती रहीं, अन्यथा वह मेवाड़ के अन्य दुर्ग में भी रह सकती थी, जो उनके पास थे। महाराणा विक्रमादित्य एवं बनवीर ये बिल्कुल नहीं चाहते थे कि मीरा वहाँ रहे और मीरा भी किसी अन्य दुर्ग में रहकर बिना किसी रुकावट के कृष्ण भक्ति कर सकती थी, फिर ऐसा क्या कारण था कि मीरा ने वहीं रहना स्वीकार किया।

यदि मीरा दुर्ग त्याग देती तो बनवीर एवं महाराणा विक्रमादित्य को अपनी मनमानी करने का पूरा अवसर मिल जाता, इसलिए

www.neerajbooks.com

www.neerajbooks.com

राजनीतिक सूझ-बूझ के आधार पर मीरा को दुर्ग को छोड़ना उपयुक्त नहीं लगा, इससे उनकी निरंकुशता पर अंकुश लगा हुआ था। मेड़तिया राठौड़ की भी यही इच्छा थी, क्योंकि मीरा के माध्यम से वे मेवाड़ राजमहल में अपना स्थान तथा हस्तक्षेप बना सकते थे। अत: उस समय की परिस्थितियों की भी यही माँग थी कि मीरा दुर्ग न छोड़े और मेवाड़ की सत्ता किसी कुशल प्रशासक के हाथों में रहे। महाराणा विक्रमादित्य अपरिपक्व व राजनीति सूझ-बूझ से वंचित था। मेवाड़ के सामंत उसके इस व्यक्तित्व से बहुत निराश थे। वल्लभ संप्रदाय से संबंधित ग्रंथों–'चौरासी वैष्णव की वार्ता' एवं 'दो सौ बावन वैष्णव की वार्त्ता' में मीरा की आलोचना की गई है। इससे अनुमान लगाया जाता है कि शायद मीरा ने वल्लभ संप्रदाय में अपनी आस्था प्रकट न की हो या फिर मेवाड़ के महाराणा के डर से ग्रंथकारों ने ऐसा किया हो।

मीरा की भक्ति के विषय में विद्वानों में आज भी मतभेद है। चित्तौड़ दुर्ग का सर्वेक्षण करने पर अनेक मंदिरों, शिवालयों तथा मठों के मध्यकालीन अवशेष प्राप्त होते है। साथ ही दुर्ग में जैन मंदिर भी मिलते हैं। ऐसा माना जाता है कि ये सभी संप्रदाय और अनुयायी दुर्ग में निवास करते थे और मीरा का भी इनके साथ निकट संपर्क रहा होगा, अत: इन संप्रदायों का कुछ-न-कुछ प्रभाव भी मीरा पर पड़ा होगा, किंतु फिर भी विद्वान मीरा को किसी संप्रदाय विशेष से जोड़ने में असफल रहे हैं। मीरा से संबंधित ऐसी बहुत-सी किंवदंतियां प्रचलित हैं, जो चित्तौड़ दुर्ग में मीरा के जीवन के विषय में बताती हैं।

मीरा की कविताओं में परंपरा का विरोध तथा सामंती मूल्यों के प्रति असंतोष झलकता है। मीरा से संबंधित लोक प्रचलित किंवदंतियों से पता चलता है कि वह रूढ़िवादी परंपराओं का विरोध करती थी। महाराणा के परिवार में शादी के पश्चात् देवी की पूजा करने की परंपरा थी, किंतु मीरा ने दुर्ग में स्थित देवी के मंदिर में देवी की पूजा करने से मना कर दिया था। महाराणा मीरा के इस विरोध से क्रोधित हुए तथा उन्हें कई अवसरों पर प्रताड़ित करने लगे। मीरा के विषय में एक किंवदंती यह है कि महाराणा का आदेश न मानने पर मीरा को तहखाने में कैद कर लिया गया था। इसके अलावा मीरा के विषपान की घटना भी प्रचलित है। मीरा ने जो परंपरा का विरोध किया था उसी के कारण महाराणा मीरा के साथ ऐसा अमानवीय व्यवहार करते रहे। सच यह है कि मीरा का चित्तौड़ दुर्ग में पूरा जीवन झूठी मान्यताओं, अमानवीय रूढ़ियों तथा सामंती मूल्यों का विरोध करने में बीता। मीरा कृष्ण की भक्ति में कुल मर्यादा को त्यागकर नाचती-गाती थीं, जोकि महाराणा कुल की परंपरा के बिल्कुल विपरीत था।

मीरा का दुर्ग त्यागना एवं द्वारिका प्रवास

मीरा ने मेवाड़ की परंपराओं का अनुसरण नहीं किया था, इसीलिए मेवाड़ के महाराणा उनके विरोधी बन गए थे, किंतु मेड़तियों के डर से वे मीरा के विरुद्ध कोई कार्यवाही करने से डरते थे। किंतु इसी बीच मारवाड़ के राव मालदेव ने मेड़ता पर आक्रमण करके मेड़ता के स्वतंत्र अस्तित्व को ही समाप्त कर दिया। मेड़तियों की शक्ति समाप्त हो गई, जिससे उनका मेवाड़ की राजनीति में हस्तक्षेप खत्म हो गया। ऐसे में मीरा का चित्तौड़ दुर्ग में रहना अधिक सुरक्षित नहीं था। मीरा ने चित्तौड़ दुर्ग छोड़ा और मेड़ता जाने का विचार किया, किंतु जब उन्हें मालदेव के आक्रमण ओर मेड़ता के पतन का पता चला, तो वह मेड़ता ना जाकर वृंदावन चली गई।

ऐसा कहा जाता है कि वृंदावन में उनकी भेंट जीव गोस्वामी से हुई। मीरा का मन वृंदावन में नहीं लगा। अत: उन्होंने द्वारिका की ओर प्रस्थान किया। चित्तौड़ दुर्ग में मीरा को सामंतवाद का सामना करना पड़ा और वृंदावन में उन्हें ब्राह्मणवाद का। अपने स्वभाव के अनुसार मीरा ने वृंदावन में भी रूढ़ियों का विरोध किया, जो वहाँ के ब्राह्मणों को नापसंद रहा होगा, ऐसे में मीरा का वहाँ अधिक समय तक रुकना उपयुक्त नहीं था।

द्वारिका में कृष्णजी के दो मंदिर है, एक समुद्र के बीच में टापू पर बसे गाँव तो दूसरा मंदिर समुद्र तट पर बसे मुख्य कस्बे में है। दोनों मंदिरों के पंडे यह दावा करते है कि मीरा ने अपना शेष जीवन उनके द्वारा कथित मंदिरों में बिताया। मीरा ने किस मंदिर में अपना जीवन बिताया यह निश्चित तौर पर बताना मुश्किल है, किंतु यह सही है कि मीरा ने द्वारिका में ही प्रवास किया।

मध्यकाल में मेवाड़ तथा गुजरात में काफी समानता थी, यह समानता उनके रहन-सहन, भाषा, पहनावे व संस्कृति में पाई जाती थी। वर्तमान समय में द्वारिका में मध्यकालीन तीन मंदिरों के अवशेष पाये जाते हैं, जिनकी स्थापत्य कला मध्यकालीन राजपूत स्थापत्य का सुंदर नमूना दर्शाती है। चित्तौड़गढ़ की कला का प्रभाव इन मंदिरों के स्थापत्य में दिखाई देता है। मीरा को द्वारिका में अजनबीपन का एहसास नहीं हुआ होगा, इसीलिए मीरा ने अपना शेष जीवन यहाँ बिताने का निश्चय किया।

गुजरात और मेवाड़ में शत्रुता थी, क्योंकि महाराणा सांगा के समय में गुजरात के सुल्तान को मेवाड़ की सेना ने परास्त कर दिया था। मेवाड़ की सेना अब गुजरात में प्रवेश नहीं कर सकती थी, अत: मीरा का यहाँ रहना सुरक्षा की दृष्टि से भी उचित विकल्प था। मीरा को द्वारिका में रहने का एक लाभ और था कि वह यहाँ रहकर मेवाड़ के लोगों के निकट संपर्क में रह सकती थी, उनकी दशा व परेशानियों को जान सकती थी।

यदि संक्षिप्त रूप में कहें तो मीरा द्वारिका में केवल कृष्ण भक्ति में ही नहीं रुकी थी, बल्कि कुछ अन्य कारण भी थे। द्वारिका में भी मीरा के विषय में कई किंवदंतियां प्रचलित हैं। ऐसा कहा जाता है कि महाराणा उदयसिंह ने मीरा को फिर से चित्तौड़ बुलाने के लिए कुछ पुरोहितों व सामंतों को द्वारिका भेजा। मीरा ने वापस जाने से इंकार कर दिया। मेवाड़ की लौटती हुई राजपूती सेना पर वहाँ की स्थानीय जनजाति ने हमला कर दिया, जोकि मीरा के प्रति उनके प्रेम का प्रमाण था। मेवाड़ के सामंतों तथा पुरोहितों ने मेवाड़ लौटकर यही बताया कि मीरा द्वारिकाधीश की मूर्ति में समा गई, किंतु इसमें कुछ आश्चर्य नहीं है, यदि मीरा अपने अनुयायियों के सहयोग से किसी अज्ञातवास के लिए प्रस्थान कर गई हो।

भक्त मीरा–एक सशक्त मीरा

मीरा के जीवन से संबंधित जो भी जानकारी मिलती है, वह किंवदंतियों, भक्तों के विवरण तथा लोगों के प्रचलित विश्वास पर आधारित है। भक्तों ने मीरा में एक भक्त की छवि को ही देखा था।

www.neerajbooks.com

www.neerajbooks.com

वे महाराणा परिवार के आंतरिक संघर्ष से बिल्कुल अंजान थे। भक्तों ने मीरा का विवरण अपने भक्तमालों में एक भक्त के रूप में ही दिया है। महाराणा मेवाड़ के परिवार में मीरा से पहले भी एक युवरानी का नाम भक्तों की गिनती में आता है, वह थी झाली रानी, जिनका उल्लेख नाभादास ने अपने 'भक्तमाल छप्पय' में किया है, जिसमें महिला भक्त कवयित्रियों का उल्लेख है।

मेवाड़ के महाराणा कुंभा एकलिंगनाथ के भक्त थे तथा मीरा के दादा रावदूदा चारभुजानाथ के परम भक्त थे। अत: युवरानी मीरा को भक्तों के बीच रहना और उन्हें भक्त माना जाना कोई आश्चर्य की बात नहीं है, किंतु भक्त के अलावा भी मीरा का एक स्वतंत्र व्यक्तित्व था। मीरा की छवि एक भक्त की ही नही थी, बल्कि तत्कालीन महाराणा परिवार में व्याप्त शक्ति संघर्ष में मीरा अवश्य ही शक्ति का केंद्र थी।

लोगों ने मीरा को एक भक्त के रूप में स्वीकार किया था, किंतु मीरा के लिए भक्ति साधन थी, साध्य नहीं। मीरा ने भक्ति के माध्यम से सती प्रथा जैसी कुरीतियों का प्रतिरोध किया तथा इसके मीरा ने भक्ति के माध्यम से ही जनस्वीकृति और लोकप्रियता को प्राप्त करके इस प्रतिरोध को अधिक सशक्त बनाया था। मीरा भक्तों के बीच में भक्त थी, किंतु चित्तौड़ दुर्ग में उनकी छवि मेड़तणी के रूप में थी अर्थात मेड़तिया राठौड़ों की बेटी। नवयुवक महाराणा मीरा को अपने राजनीतिक प्रतिद्वंद्वी के रूप में देखता था, क्योंकि महाराणा विक्रमादित्य हाड़ाओं का भांजा था, जो राठौड़ों के प्रतिद्वंद्वी थे। मीरा ने उस समय की सामाजिक परंपराओं का खुलकर विरोध किया था। मीरा ने महाराणा महल को पार करके आम जनता के साथ सीधा संपर्क स्थापित किया था, जोकि महाराणा परिवार की परंपरा के विरुद्ध था।

मीरा कृष्ण भक्ति में मग्न होकर नृत्य करना शुरू कर देती थी। मीरा एक स्त्री होने के साथ-साथ महाराणा परिवार की पुत्रवधू थी, अत: आम जनता के लिए तो यह आश्चर्य का विषय तो था ही, साथ ही इनकी सास हाड़ी रानी उन्हें कुल का कलंक मानती थी। मीरा का घुंघरू बांधकर नाचना लोगों को आश्चर्यचकित करता था, अत: लोग मीरा को सनकी मानने लगे थे। मीरा परंपराओं का विरोध करने के कारण लोगों के निकट संपर्क में आ गई, इससे इनकी लोकप्रियता भी तेजी से बढ़ने लगी। भक्तों के लिए मीरा भक्त थी, लोक ने उन्हें बावरी बहू समझा, चित्तौड़ दुर्ग में मीरा मेड़तणी थी और स्त्री समाज ने उन्हें मुक्ति मार्ग का माध्यम माना। मीरा की मृत्यु के पश्चात् मेवाड़ के शासकों ने मीरा को भक्त रूप में स्वीकार कर लिया था, क्योंकि मीरा की लोकप्रियता से अब कोई खतरा नहीं था। सच तो यह था कि मीरा को भक्त से ज्यादा सामाजिक परिवर्तन का माध्यम माना जा रहा था, जन-मानस में उनकी लोकप्रियता से इस बात की पुष्टि होती है कि मीरा की यह छवि मेवाड़ के शासकों को खतरा लगने लगी थी।

मीरा से संबंधित किंवदंतियां

मीरा के जीवन चरित्र को अधिक निकटता से समझने के लिए मीरा के विषय में प्रचलित किंवदंतियों का ज्ञान जरूरी है। मेवाड़, मारवाड़ एवं गुजरात क्षेत्र में मीरा से संबंधित, जो किंवदंतियां प्रचलित हैं, उनसे पता चलता है कि मीरा के प्रति लोक-आस्था बहुत गहरी थी। ऐसा माना जाता है कि महाराणा मीरा को मारना चाहता था और इसी उद्देश्य से उसने मीरा के लिए विजयवर्गीय बनिए के हाथों विष का प्याला भेजा, किंतु मीरा विष पीने के बाद भी जीवित रही। बनियों की एक शाखा को राजपूताने में विजयवर्गीय कहा जाता है और ये लोग आज भी मीरा की उपासना व मीरा मंदिर का निर्माण करवाते है। इसके पीछे यह मान्यता है कि इससे विष देने के कारण वे शाप के भागी बने, उससे मुक्ति मिलती है।

चित्तौड़ दुर्ग में मीरा के मंदिर के पास ही एक निर्गुणपंथी साधु की समाधि है। कहा जाता है कि यह समाधि मीरा के गुरु रैदास की है। मीरा जाति प्रथा में विश्वास नहीं रखती थी। वह सबको एक समान देखती थी, किंतु रैदास और मीरा के समय एवं जीवनकाल के अंतर को देखते हुए ऐसा नहीं लगता कि रैदास मीरा के गुरु रहे होंगे। इस प्रकार मीरा व तुलसीदास के बीच पत्र-व्यवहार की चर्चा मिलती है, किंतु उनके समय एवं जीवनकाल में भी व्यापक अंतर मिलता है। ऐसे में पत्र-व्यवहार की बात पर विश्वास करना कठिन लगता है। हालांकि मीरा व तुलसीदास के परस्पर पत्र-व्यवहार के प्रमाण के रूप में तुलसी के एक पद– 'जाके प्रिय न राम वैदेही' का उल्लेख किया जाता है।

मेवाड़ की जनता के मन में मीरा के लिए प्रेम और श्रद्धा भरपूर थी, वे उनमें चमत्कारिक देवी को देखने लगे थे। अत: मीरा से संबंधित अनेक चमत्कारिक घटनाएँ प्रचलित हैं; जैसे–मीरा को मार्ग में शेर मिलना, शेर का मीरा को प्रणाम करके लौट जाना। महाराणा ने मीरा को तहखाने में बंदी बनाया और मीरा वहाँ भी सुरक्षित रहीं तथा मीरा का कृष्ण से प्रत्यक्ष बातचीत करना। ये चमत्कारिक घटनाएं थोड़ी असत्य प्रतीत होती हैं, किंतु शायद यही घटनाएं मीरा की व्यापक लोक-स्वीकृति का प्रमाण हैं। इससे यह भी पता चलता है कि तात्कालिक महाराणा को मेवाड़ की जनता पसंद नहीं करती थी। इससे यह भी पता चलता है कि मीरा एवं महाराणा के बीच संबंधों में कटुता थी। एक किंवदंती यह भी है कि मीरा को चित्तौड़ दुर्ग में किसी अवसर पर देवी की पूजा करने को कहा गया, किंतु उन्होंने पूजा करने से मना कर दिया और कहा कि उनके आराध्य केवल कृष्ण है एवं कृष्ण के अलावा वह किसी देवी-देवता की पूजा नहीं करती। उस समय चित्तौड़ दुर्ग के बाहर कृष्ण भक्ति अधिक दिखाई पड़ती थी। मीरा के जीवन में ऐसे बहुत से कार्य हैं, जो जनता के लिए मीरा के प्रेम को प्रमाणित करते हैं, यदि ऐसे में मीरा देवी पूजा से इंकार करके कृष्ण पूजा पर जोर देती है, तो वह आश्चर्य की बात नहीं होनी चाहिए। मीरा की भक्ति उनका व्यक्तिगत विषय था। वह किसी संप्रदाय या पंथ से जुड़ी हुई नहीं थी।

मीरा के विषय में ऐसी अनेक किंवदंतियां प्रचलित हैं कि मीरा ने बचपन में ही स्वप्न में कृष्ण से विवाह कर लिया था, इसलिए विधवा होकर भी वह वैधव्य को धारण नहीं करती थी। ऐसा भी कहा जाता है कि कुंवर भोज व मीरा के बीच शादी से पहले ही यह समझौता हो गया था कि वे किसी भी प्रकार का शारीरिक संबंध नहीं रखेंगे। एक किंवदंती यह भी है कि मीरा के

www.neerajbooks.com